(अर्थशास्त्र)

अर्थशास्त्र को उनके विषय के आधार पर दो भागों

1) आधुनिक विचारधारा
2) परम्परागत विचारधारा

A) ~~आधुनिक~~
परम्परागत विचारधारा -:

i) उत्पादन
ii) विनिमय
iii) वितरण
उपभोग
iv) राजस्व / सार्वजनिक वित्त

1) उत्पादन → किसी वस्तु या सेवा की उपयोगिता की वृद्धि करना जिससे मानव की आवश्यकताओं की संतुष्टि हो सके, उत्पादन कहलाता है। जैसे मानव द्वारा किसी वस्तु का निर्माण करना जैसे लकड़ी के द्वारा फर्नीचर निर्माण, रेशम के द्वारा वस्त्र निर्माण आदि।

विनिमय → विनिमय का अर्थ है क्रय विक्रय या आदान प्रदान करना। यह एक आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं का मूल्य का निर्धारण होता है। [illegible] वस्तु का [illegible] [illegible] के आधार पर ही किया

होता है।

वितरण :- वितरण एक आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा उत्पादन के विभिन्न साधन यानि भूमि, श्रम, पूँजी, व्यवस्था व साहस के बीच उत्पादन का उनके योगदान के द्वारा वितरण किया जाता है। वितरण में मुद्रा/भुगतान के मापन को भी शामिल किया जाता है।

उपभोग → उपभोग सभी आर्थिक क्रियाओं का आधार माना जाता है। उपभोग किसी वस्तु का जितना अधिक मात्रा में होगा उत्पादन भी उन वस्तुओं का उतना अधिक होगा। इसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं का मनुष्यों द्वारा हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु व्यवहार किया जाता है।

लोक वित्त → लोक वित्त के द्वारा हम यह जानकारी प्राप्त करते हैं कि कोई भी सरकार अपने राजस्व की प्राप्ति कैसे करती है।

आधुनिक विचारधारा :-

आधुनिक विचारधारा ने इसे दो मुख्य भागों में विभाजित करते हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र व समष्टि अर्थशास्त्र।

निर्धारण किया।

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र : का अर्थ -

शब्द "MIKROS" से बना है जिसका अर्थ है छोटा। इसमें [illegible] व्यक्तिगत इकाइयों [illegible] अर्थशास्त्र में [illegible] का अध्ययन करते हैं [illegible] व्यक्तिगत इकाई जैसे [illegible] एक फर्म, एक उपभोक्ता [illegible] का अध्ययन [illegible] व्यक्तिगत इकाई [illegible] आदि का अध्ययन [illegible]

व्यष्टि अर्थशास्त्र का महत्व :

संसाधनों के आवंटन में सहायक
आर्थिक नीति निर्माण में सहायक
सामान्य आवश्यकताओं का आधार
उत्पादन मूल्य निर्धारण में सहायक
आर्थिक संतुलन में सहायक
मौद्रिक सिद्धांत निर्माण में सहायक

समष्टि अर्थशास्त्र :-

समष्टि शब्द ग्रीक भाषा के शब्द MAKRO से लिया गया है जिसका अर्थ होता है विशाल या सम्पूर्ण। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन कराती है इसमें अर्थव्यवस्था के विशिष्ट इकाई का नहीं बल्कि सभी इकाइयों का विस्तृत अध्ययन करते हैं इसे हम आय का सिद्धान्त या रोजगार का सिद्धान्त भी कह सकते हैं। इसके अन्तर्गत :- राष्ट्रीय आय, उत्पादन, रोजगार, विनियोग, कुल माँग, कुल पूर्ति, कुल उपभोग आदि आते है।

समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व -:

राष्ट्रीय आय का अध्ययन।

आर्थिक समस्याओं का समाधान।

संसाधनों के आबंटन में सहायक

आर्थिक नीति निर्धारण में सहायक।

संतुलन बिन्दु के निर्धारण में सहायक।